BAOU Education for All | Dr. Babasaheb Ambedkar Open University (Established by Government of Gujarat)
A Refereed and Peer-Reviewed International e-Journal of Humanities and Social Sciences
Website: http://jyotirmay.baou.edu.in/chaitanya/ Email: chaitanya.ejournal@baou.edu.in
॥ चैतन्य ॥ CHAITANYA
ISSN: 2582 2802

Year–07, Volume –07, Issue–02, June–2026

धर्म और विज्ञान: रसायनशास्त्र में भस्मविज्ञान

– जयकुमार राजेशभाई चुडासमा

शोधसार (Abstract):

प्राचीन भारतीय परम्परा में जो धर्म के साथ जो विज्ञान जुड़ा हुआ है, वह सायद कही अन्यत्र नहीं होगा । इसी विषय में रसायनविज्ञान अर्थात् हमारे ऋषि तथा आचार्यो ने जो पारदादि धातु –उपधातु पर जो शोध की उनमे देहवाद से लेकर धातुपरिवर्तन जेसी जटिल क्रियाभी शामिल है । रसशास्त्र में धातु –उपधातु की जो भस्म-निर्माण प्रक्रिया है और उनमे जो परिवर्तन की शक्ति है वह उनकी सूक्ष्मता दर्शाति है । विविध प्रकार की भस्मो के माध्यम से किस प्रकार धातु परिवर्तन तथा उपचार होता है वह रसशास्त्र में दर्शित है । भस्म को सूक्ष्म बनाने ले लिए जो पुट का भी विधान है **"रसादिद्रव्यपाकानां प्रमाणज्ञापनं पुटम्"** यहाँ पर हमें

आग- लाख- माप

इन सभी चीजो का समन्वय और हस्तक्रिया का कौशल दिखता है । पारदादी धातु –उपधातु को विविध वनस्पति के योग से किस तरह भस्म करते है बगेर एसिडिक पदार्थो के बिना । यह विज्ञान अपने आप में एक विज्ञान है प्रायः रसशास्त्रों में भस्मो कोभी चार श्रेणी में विभक्त किया है उसके रंग और सूक्ष्मता भस्मकी गुणवत्ता दर्शाता है धातुपरिवर्तन में भस्मका वेध उसके नेनो-पार्टिकल के विज्ञान में प्रस्तुत होता है । रसायन का पूरी वेध क्रिया भस्म विज्ञान पर आधारित है । जेसे की पारद, जस्ता, ताम्बा, रजत, सोना, वंग,नाग तथा गंधक, सोमल, हरताल, रससिंदूर आदि की भस्म निर्माण की विधि रसरत्नसमुच्चय, रसप्रकाशसुधाकर, रसमंजरी, रस –रत्नाकर, पारद –संहिता, रूद्रयामल-तंत्र, स्वर्ण-तंत्र, रसेन्द्रमंगल, चरकसंहिता आदि ग्रंथो में भस्म निर्माण के ऊपर प्रमाणिक विधि प्राप्त होती है ।

संक्षिप्त शब्द (Keywords): रस, द्रव्य, वेध, भस्म, हरताल, पुट, क्षेप, र. पु. - रसेन्द्र पुराण, र.र.स.- रसरत्नसमुच्चय, ध.स. – धरणीधर संहिता, पा.सं. - पारद संहिता ।

प्रस्तावना:

भारतीय संस्कृति में समाज, धर्म और उपदेशो के साथ साथ विज्ञान भी एक अभिन्न अंग है । जिसमे विज्ञान की स्वतंत्र शाखाओ पर भी बाहुल्यरूप से अध्ययन, प्रयोग और ग्रंथरचना भी हुई है । जीस तरह वर्त्तमान काल में भौतिकविज्ञान और रसायणविज्ञान शोध के विषय है उसी प्रकार प्राचीन समय में रसायन विज्ञान का धातुवाद भी एक महत्त्वपूर्ण अध्ययन का विषय रहा है । जिसमे प्राचीन काल के नागार्जुन, मध्यकाल के गोरक्षनाथ और चाणक्य तक ने इस विषय के माध्यम से आर्थिक पक्ष को सशक्त करने की बात की है ।

अर्थाः सहाया निखिलं च शास्त्रम्
हस्तक्रिया कर्मणि कौशलं च ।
नित्योद्यमस्तत्परता च वह्नि
रेभिर्गुणैः सिध्यति सूतकेन्द्रः ।। (पा.सं.)

इसी विषय को एक नए दृष्टिकोण से प्राचीन एवं आधुनिक विश्लेषण कर के प्रायोगिक और सैद्धांतिक पक्ष को विश्व के समक्ष रख सकते है । जिनसे भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित वैज्ञानिकता हम आधुनिक परिपेक्ष्य में प्रस्तुत कर पुनः जीवंत कर सकते है । इस तरह पूर्व में हुए इस विषय के प्रयोगों और सिद्धांतो का परिचय, उसकी पद्धति, उनके आधुनिक रसायण के साथ विविध विषयो के मतभेद और हो सके उस सीमा तक उनका निवारण भी करने का प्रयास हो सकता है ।

विविध धातु-उपधातुभस्म परिचय:

हरति सकल रोगान्मूर्च्छितो यो नराणां
वितरति किलबद्धः खेचरत्वं जीवेन ।
सकल सुरमुनीन्द्रैर्वन्दितं शम्भुबीजं
स जयति मयसिन्धोः पारदः पारदोयम् । । (पा.सं.)

मूर्च्छित पारा रोगों को हरता है, मृत पारा धातु को परिवर्तित करता है तथा बंधा हुआ पारा सिद्धि प्रदान करता है। धातु रंगाई और भस्म विज्ञान ऋषि प्रदत्त सिद्धांत द्वारा ही संभव है। उन्होंने देहसिद्धि और लौहसिद्धि अर्थात निम्न धातुओं तांबा, टिन, जस्ता, सीसा को उच्च धातुओं सोना-चांदी में परिवर्तित किया, शिव, भैरव, चंद्रसेन, सिद्धिनागार्जुन, रावण, नित्यनाथ आदि रसाचार्यों विभिन्न रसशास्त्रों का प्रतिपादन किया। प्राय: ये ग्रंथ विलुप्त प्रतीत होते हैं परंतु इनके प्रतीकात्मक एवं विडम्बनापूर्ण रहस्य को समझना होगा, तभी यह प्रक्रिया होती है ।

विविध रस द्रव्यों की भस्म निर्माण पद्धति से पहले रसशास्त्र के कुछ प्रक्रिया की परिभाषा समजना आवश्यक है । पारद (Mercury), सोना(Aurum-Gold), चांदी(Argentum-Silver), ताम्बा(Copper), वंग (Tin),नाग (Lead) और लोहा यह सब रसायन शास्त्र की मुख्य धातु है एवं गंधक (Sulfur), सोमल (Arsenic), हरताल, सिंगरफ, मेनसिल, नवसार, तुत्थ, और कसीस ये सब उपरस यानी उपधातु की श्रेणी में आते है । भस्मनिर्माण में अमुक क्रिया की जाती है जैसे यंत्र निर्माण कर के द्रव्य का शोधन, मारण, संस्कार आदि उनमे से पुट विधान भी आवश्यक है ।

"रसादिद्रव्यपाकानां प्रमाणज्ञापनं पुटम्" अर्थात् पारद आदि द्रव्य को पकाने या भस्म करने के लिए जो निश्चित प्रमाण में जो अग्नि दी जाती है उसको पुट कहते । सभी ग्रंथो में से हमें कुल तेरह पुट का वर्णन प्राप्त होता है । इन सभी को हमने एक ही श्लोक में आवृत कर लिया है ।

महागजौ भूधरलावकौ च कुक्कुरभाण्डश्च कपोतकुम्भौ ।
वाराहबालुत्पलनादिनुक्त त्रयोदश्चाग्नि पुटं प्रसिद्धाः ।।

१) महा पुट २) गज पुट ३) भूधर पुट ४) लावक पुट ५) कुक्कुर पुट ६) भांड पुट ७) कपोत पुट ८) कुम्भ पुट ९) वाराह पुट १०) बालुका पुट ११) उत्पल पुट १२) नादी पुट १३) उक्त पुट

इसी तरह भस्म निर्माण में बहोत सारे यन्त्र निर्माण की भी रचना रस शास्त्रों में प्राप्त होती है "कूपीयन्त्रं पालिकाख्यं दीपिकायन्त्रकं तथा ।स्थालीयन्त्रं भस्मयंत्रं देगयन्त्रमुदीरितम् ।।" जिनमे कच्छप, ढेकी, डमरू, हंस, पातळ, खल्व, आदि का समावेश होता है । रसशास्त्र में जो प्रमुख मूल धातु एवं उसका भस्मनिर्माण भस्म यन्त्र से होता था उसका वर्णन हमें रस प्रकाश सुधाकर नामके ग्रन्थ में प्राप्त होता है ।

काष्ठौषध्यो नागे नागो वंगेथ वन्गमपि शुल्बे ।
शुल्बं तारे तारं कनके कनकं च लियते सुते ॥ (र.र.स.)

पारदभस्म का भी रंग के अनुसार निर्माण का विधान है जेसे "श्वेतं पीतं तथा रक्तं कृष्णं चेति चतुर्विधम् । लक्षणं भस्मसूतानां श्रेष्ठं स्यादुत्तरोत्तरम् ।।" श्वेत भस्म, पीत भस्म, लाल भस्म और कृष्ण भस्म उतरोत्तर क्रम से श्रेष्ठ है । अतः भस्म निर्माण पारद की किस रंग की निर्माण हो रही है उसी के आधार पर उसका लोहवाद तथा देहवाद में उपयोग होता है । पारद के भस्म को ग्रंथो में मृत पारद भी कहा गया है जो रोग को दूर करने वाला एवं धातु परिवर्तन में समर्थ है ।

सुवर्ण भस्म तेज वृद्धि करती है एवं ज्योतिषमति आदि वनस्पति से इसका कल्प भी निर्माण होता है जो स्मरण शक्ति को बढाने वाला है । रजत भस्म पारद बंधन एवं वात प्रकोप को शांत करती है ।

ताम्र भस्म आयुवर्द्धक, वीर्यवर्धक, अग्नि को प्रदीप्त करती है तथा असाध्य रोगों की चिकित्सा में उपयोगी है ताम्र की श्वेत भस्म को लोहवेध में महत्व पूर्ण माना गया है । ऐसे ही वंग भस्म और नाग भस्म का भी निर्माण होता है । तुत्थ की जो भस्म बनती है उसे रसायन में 'गुरुभस्म' कहते है यह गुरुभस्म वनस्पति में से रस को शीघ्रता से निकालने में सहायता करती है एवं पारद को बंधन में लाने के लिए महत्व पूर्ण भस्म है । ऐसे ही हरताल भस्म, सोमल भस्म, सिंगरफ भस्म मेनसिल भस्म आदि का निर्माण होता है । सभी भस्म निर्माण में शोधन एक महत्व पूर्ण चरण है इसका एक प्रमाण अभ्रक भस्म से देखा जा सकता है ।

मृतं वज्राभ्रकं सम्यक् सेवनीयं सदा बुधैः । वलिपलितनाशाय दृढतायै शरीरिणाम् ॥
सर्वव्याधिहरं त्रिदोषशमनं वह्नेश्च संदीपनं । वीर्थस्तंभविवृद्धिकृत्परमिदं कृच्छ्रादिरोगापहम् ।। (र.पु.)

अभ्रक की शुद्ध भस्म भस्म का सेवन नपुंसकता को दूर रखती है तथा शरीर को बल प्रदान करती है। यह सभी रोगों का नाश करती है, तीनों दोषों (वात, पित्त एवं कफ) को संतुलित करती है, जठराग्नि को प्रबल बनाती है, वीर्य का संरक्षण एवं वृद्धि करती है। आयु वृद्धि में सहायक होती है। अतः इसका नियमित सेवन लाभकारी माना गया है। परन्तु ध्यान रहे यदि भस्म अशुद्ध रह जाए तो उसका सेवन अत्यन्त घातक सिद्ध होता है, और प्राणहानि तक हो सकती है, ठीक वैसे ही जैसे विष, बिजली या अग्नि से मृत्यु हो। इसलिए भस्म को पूर्णतः शुद्ध होना चाहिए।

पारद एवं अन्य पदार्थो को भस्म करने के लिए निश्चित वनस्पति का वर्णन मिलता है जो सिद्धौषधि पारद को खरल,पुट, जारण, मारण आदि से भस्म करने की क्षमता रखती है । उसके नाम निम्न प्रकार है –

अयेदानीं प्रवक्ष्यामि सिद्धौषध्यो रसाधिकाः । देवलता कालवर्णी विजयासुरी सिंहिका ॥
पालाशतिलका क्षेत्रो संवीरा ताम्रवल्लिका । नाही कन्या तथा सोमराजिका च दुडुम्भटी ॥
कुचेराक्षी गृत्रनखी पर्पटी छिद्रलम्बिका । क्षुत्कारी दुग्धिका श्रृंगी गंगेटी शरपुद्धिका ॥
अष्टावल्ली राजशमी पनसी च जयन्तिका । विषखर्परिकावन्ती काकाण्डे। लाम्बुमूलिका ॥
सिद्धेश्वरी इंसपादी खोंटका श्रृंगरीटिका । अधःपुष्पी मधुराख्या शृङ्खला गृञ्जनीति च ॥
जारावली महाराष्ट्री सहदेवेश्वरी तथा । काष्ठगोधामती देवगान्धारी रजनीगुदी ॥
पलाशिनी नाकुली च काम्बोजिकाश्विनी तथा ।चक्रवल्ली सर्पदंष्टा शल्लकी रोहिता तथा ॥
तौवरी बंगजा राजपद्मा जम्बीरवल्लिका । गजपिप्पलिका श्रृंगवल्ली चैवार्कवल्लिका ॥
जन्तुकारी शिग्रवल्ली करवीरा शिवाटिका । नाराची काञ्चनी चाजगन्धा सूतेन्द्रसिद्धिदाः ।।
अष्टषष्टिरिति मोक्ता सिद्धौषध्यो रसाधिकाः । सर्वकार्यकरा देहलौहसिद्धिप्रदायकाः ॥ ३०३९ ॥ (र.पु.)

देवलता, कालवर्णी, सिंहिका, ताम्रवल्ली आदि ६४ वनस्पति की श्रेणी प्राप्त होती है । भस्मीकरण की क्रिया धातु तक ही सीमित नहीं है बल्कि रत्न जेसे हार्ड स्टोन को भी भस्म करने की विधि हमारे रसग्रंथो में प्राप्त होती है ।

धनार्थिनो जनाः सर्वे रमन्तेऽस्मिन्नतीव यत् ।
अतो रत्नमिति प्रोक्तं शब्दशास्त्रविशारदैः ।। (र.पु.)

धन की इच्छा करने वाला मनुष्य जिसमे रमण करते है अतः इसको रत्न कहा गया है । रत्न शब्द नपुन्सकलिंग में है । एवं मणि शब्द स्त्रीलिंग एवं पुलिंग दोने में होता है । प्रायः हम मात्र ज्योतिष शास्त्र में ही रत्न का परिचय प्राप्त होता है लेकिन रसायन शास्त्र में भी इसका वर्णन मिलता है । रसायन शास्त्र में रत्न के शोधन, मारण और भस्म निर्माण की विधिओ का वर्णन है । रत्न के माध्यम से पारे का बंधन करना या फिर पारे से रत्न निर्माण इस के विषय में वर्णन प्राप्त होता है । प्रमुख नव रत्न एवं दसवा 'राजावर्त' कहा गया है ।

वेधकर्म:

"व्यवायिभेषजोपेतो द्रव्ये क्षिप्तो रसः खलु वेध इत्युच्यते" विविध भस्म निर्माण के बाद उसकी वेधकता अर्थात् भस्म को धातु के ऊपर प्रेक्षण करवाना यह देह और लोह दोनों में संभव है इसी क्रिया को वेध एसी संज्ञा दी है। प्रायः पांच प्रकार के वेधकर्म का वर्णन मिलता है लेपवेध, क्षेपवेध, कुन्तवेध,धूमवेध एवं शब्दवेध।

1) लेपवेध: **कल्केन लेपितान्येव ध्मापयेदन्धमूषया । शीतीभूतं तदुत्तार्यं लेपवेधः सकथ्यते ।।** (ध. सं.) जिस भस्म से वेध करना है उसको कल्क जैसा बनाकर जिसका वेध करना हो ताम्र रजत आदि उसपर लेपन करके को वेध होता है उसे लेपवेध कहते है ।

2) क्षेपवेध: **प्रेक्षपणं द्रुते लोहे वेधः स्यात्क्षेपसंज्ञितम् ।।** (र.र.स.) जिसका वेध करना हो उस धातु को गला कर उसमे जो भस्मद्रव्य प्रक्षेप कर के जो वेध होता है उसे क्षेपवेध कहते है । भस्म से वेध करने की क्रिया ज्यादातर क्षेपवेध से ही वर्त्तमान लोहवेध होता है ।

3) कुन्तवेध: **संदंशधृतसूतेन द्रुतद्रव्याहृतिश्च या । सुवर्णत्वादिकरणं कुन्तवेधः स उच्यते ।।** (र.र.स.) गले हुए धातु में सिद्धरस को डालने से जो धातु परिवर्तन होता है उसे कुन्तवेध कहते है ।

4) धूमवेध: **धूमस्पर्शेन जायन्ते धातवो हेमररूपताम् । कलधौतादयः सर्वे धूमवेधः स कथ्यते ।।** (ध.सं.) जिस द्रव्य और भस्म के धूएँ से धातु वेध होता है उसे धूमवेध कहते है ।

5) शब्दवेध: **मुखस्थिरसेनाल्पलोहस्य ध्मपनात्खलु । स्वर्णरूप्यत्वजननं शब्दवेधः सउच्यते ।।** (र.र.स.) पारद जैसे द्रव्य को मुख में रख के जिसका परिवर्तन करना हो उस धातु को फूंक मरने से जो परिवर्तन होता है उसे धूमवेध कहते है ।

भस्म की शक्ति उसकी सूक्ष्मता पर भी आधारित है भस्म जितनी सूक्ष्म उतनी उनकी वेधक शक्ति ज्यादा "शतसहस्रलक्षाणाम् कोटिधुम्रादिवेधनम्" अर्थात सिद्ध किया हुआ रस (भस्म) सौगुने,हजार गुने, लाख गुने तथा करोड़ गुने पदार्थ को वेध करता है । इस बात यह तो स्पष्ट है की भस्म की सूक्ष्मता एक परमाणु विज्ञान एवं नेनो-पार्टिकल का कुछ गहन सम्बन्ध है । भस्म की सूक्ष्मता के विषय में रसशास्त्र कहते है की "मृतं तरति यत्तोये लोहं वारितरं ही तत् ।" अर्थात् मृत(भस्म) किया हुआ लोहा(कोई भी धातु की भस्म) जल पर तरने लगे उसे वारितर (अति सूक्ष्म) कहते है इस क्रिया से भस्म की परीक्षा भी होती है । इसी तरह उनम भस्म, रेखापूर्ण भस्म, अपुनर्भव भस्म और उत्थापन भस्म आदि परिक्षण एवं उनकी सूक्ष्मता ज्ञात करने के प्रकार है ।

सैद्धान्तिक प्रमाण:

तत्त्व के गुणधर्मो को समझने के आधुनिक और प्राचीन सिद्धांतो में जो अत्यधिक अंतर है उससे तत्त्वों/धातुओ से होनेवाले प्रयोगों के असिद्ध होने की संभावना अधिक हो जाती है । आधुनिक परिपेक्ष्य में पारद [Mercury(Hg) – 80] में से १-परमाणु निकाल देने से सुवर्ण [Gold(Au) – 79] प्राप्त हो सकता है । किन्तु यह प्रयोग आधुनिक पद्धति से शक्य होना अत्यंत कठिन है । जब की प्राचीन मतानुसार सुवर्ण को स्वतंत्र तत्त्व न मानकर एक संयोजित-धातु के रूप में देखा गया ।

इस प्रकार सुवर्ण और रजत को स्वतंत्र तत्त्व न मानकर दो तत्त्वों के संयोजन के रूप में दिया गया है । सन १८६९ में प्रो. ग्रेहाम ने सुवर्ण(Au) पर विद्युत के प्रहार द्वारा उसमे से सल्फर के अलग होने का प्रायोगिक परिणाम पाया जो प्राचीन सिद्धान्त को प्रमाणित करता है । "There are, however, indication that even those so-called simple bodies are the results of combination of still more primitive elements. It has been observed that when lightning has struck gilded ornaments, they have become blackened, and it has been found, on analysis the blackened matter, that the presence of sulphur was distinctly indicated. Unless sulphur exists in the lightning it must have existed in the gold & have been evolved by the action of lightning. We may then fairly assume that gold contains the elements of sulphur, and this is. no anomaly in the case of gold, as other metals have also been proved to contain the elements of sulphur. (David. Law, F.R.S.E. "Simple bodies in Chemistry") and the dreams of physical alchemy way, have some foundation, after all. But sulphur is supposed to be related to nitro-gen, and the elements of nitrogen are believed to de hydro--and carbon, and if we go still further, we find that even on the physical plane, all bodies are only modifications of one primordial element, which is not of a sufficiently material. Nature to be detected by physical means...etc. (Franz. Hartmann, Magic, Black and white, P. 210).

प्रायोगिक इस प्रयोग में देखा गया की सोने परजब बिजली का प्रहार किया गया तो यह पाया गया की सोना काला हो गया और विश्लेषण करने पर पाया गया की इसमें सल्फर की उपस्थिति है । और बहोत ही कम मात्र में पारा भी पृथक हुआ । सल्फर यानी गंधक नाइट्रोजन के साथ सम्बन्ध रखता है अतः अभी आधुनिक विज्ञान यहाँ पर नहीं पहुचा लेकिन हमारे यहाँ रसशास्त्र में इनका विवरण है । इस प्रयोग से हम कह सकते है की यदि धातु का पृथुकरण हो सकता है तो संयोग भी संभव है ।

अनुभूत प्रायोगिक परिणाम:

इस विषय का जब प्रायोगिक किया गया लोहवाद के अंतर्गत तो परिणाम आश्चर्यजनक थे हमने शुद्ध एवं प्रथम संस्कारित पारद को करीब एक तोला (११ ग्राम) मात्रा में लिया उसको त्रिपत्ति (लूणी बूटी) के रस में करीब १०० ग्राम में गरम किया तोह हमें पारद के वजन जीतनी ही पारद भस्म प्राप्त हुई और उसका रंग पिला था और हवा के सम्पर्क में आने से वह काली हो रही थी । प्रारम्भ में पारद श्वेत रंग की बाद में लाल रंग की और अंत में हमें पीले रंग की पारद भस्म प्राप्त हुई और इस भस्म की विशेषता यह रही की वह ताम्र को असिड में घुलने की क्षमता को धीमा कर देती है तो इसके माध्यम से हम ताम्र की गुणवत्ता बढ़ा सकते है ।

इसी तरह सोमल को तिन पुट में एक कांच जैसी भस्म निर्माण की जिनसे ताम्र श्वेत हो जाता है उनके ऊपर आर्सेनिक ऑक्साइड बोंड में फस जाता हैं । इस कारण से वह ताम्र सफ़ेद दिखता है इसके भी चित्र रखे हुए है ।

सारांश:

सभी क्रिया में तिन चीज का महत्व है और रसशास्त्री एवं ग्रंथो का सार यह है की लोहवाद इन तिन चीज पर निर्भर है । (१) आग (२) लाख (३) माप आग यानी यन्त्र पुट में हम द्रव्य को कितनी अग्नि दे रहे है लाख यानी कार्बन और कोनसा द्रव्य बना रहे है और अंतिम है माप यानी मात्रा यदि हम अधिक मात्रा से वेध करते है या कम तो भी परिणाम प्राप्त नहीं होता ।

यदि हमारे इस सिद्धांतो पर कार्य किया गया तो हमारा भारतीय विज्ञान एक ठोस नीव रख सकता है आधुनिक समय में इस प्रयोगों से हम आधुनिक विज्ञान में जो की पश्चिम की दें है उसे चेलेंज कर सकते है और हमारे इस ज्ञान विज्ञान को पुनः विश्व के समक्ष कर सकते है ।भारत की विलुप्त हो चुकी यह विद्या फिर से लोगों और संस्कृत के लोगों के बीच जीवंत होनी चाहिए। इस रसविद्या के माध्यम समाज संस्कृत की ओर आयेगा। अनुसंधान केंद्र के माध्यम से शोध किया जा सकता है। जिससे छात्र एवं शोधार्थी अध्ययन कर सकें और ऐसे कई विषयों पर नई खोज की जा सकती है । यदि हमारे इस सिद्धांतो पर कार्य किया गया तो हमारा भारतीय विज्ञान एक ढोस नीव रख सकता है आधुनिक समय में इस प्रयोगों से हम आधुनिक विज्ञान में जो की पश्चिम की दें है उसे चेलेंज कर सकते है और हमारे इस ज्ञान विज्ञान को पुनः विश्व के समक्ष कर सकते है।

सन्दर्भसूची:

- वर्मा, अत्तरसिंह.धुम्रवेध -१. नवभारत साहित्य मंदिर, १९९५.
- वर्मा, अत्तरसिंह.धुम्रवेध -२. नवभारत साहित्य मंदिर, १९९५.
- रसेन्द्र पुराण. खेमराज प्रकाशन मुंबई, १९१०.
- रसरत्नसमुच्चय. चोखाम्बा प्रकाशन, १९६०.
- गिरनार से प्राप्त पुस्तक. हस्त लिखित.
- धरणीधर संहिता. चोखाम्बा प्रकाशन, १९८०.
- रुद्रयामल. चोखाम्बा प्रकाशन,१९३०.
- स्वर्णतन्त्रम्. चोखाम्बा प्रकाशन, १९८०.
- पारद संहिता. खेमराज प्रकाशन मुंबई, १९१०.

जयकुमार राजेशभाई चुड़ासमा, सहायक प्राध्यापक - हिंदू अध्ययन, स्कूल ओफ ह्युमेनिटिझ एण्ड सोशियल सायन्सिझ, डो. बाबासाहेब आम्बेडकर ओपन यूनिवर्सीटी, अमदावाद.
Email: satya81jeet@gmail.com